सूचना प्रौद्योगिकी - बैंकों के लिए हस्त-त्राण*

आर. गांधी

माननीय गवर्नर डॉ. रघुराम राजन, आईडीआरबीटी के गवर्निंग काउंसिल के सदस्यगण, बैंकों के प्रमुख, बैंकों के आईटी विभागों के विभाग प्रमुख, आईडीआरबीटी के निदेशक, संकाय-सदस्य, विद्यार्थीगण, देवियो और सज्जनो! यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आज मैं आईडीआरबीटी के बैंकिंग प्रौद्योगिकी के 12वें पुरस्कार समारोह में उपस्थित हूं।

2. मुझे खुशी है कि प्रौद्योगिकी विषय पर मुझे सीधे-सीधे बात करने का एक मौका और मिल रहा है। यह मेरे लिए गौरव की बात है कि आईडीआरबीटी में मैं लगभग सभी भूमिकाओं में रहा हूं - प्रशिक्षार्थी के रूप में, संकाय-सदस्य के रूप में, जनरल काउंसिल के आमंत्रिती के रूप में, इसके निदेशक के रूप में, जनरल काउंसिल के सदस्य के रूप में तथा काउंसिल के अध्यक्ष के रूप में; इन सबका मुझे विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसे मैंने संजो कर रखा है।

3. यदि ऐसी कोई चीज है जिसने बैंकिंग के चेहरे को और अंदरूनी तौर पर बदल कर रख दिया है और लगातार बदलती जा रही है तो वह है प्रौद्योगिकी। बैंकिंग और वित्त क्षेत्र इस प्रकार की अत्यधिक उपयुक्त सतत प्रौद्योगिकी एप्लीकेशंस के ऋणी रहे हैं; प्रौद्योगिकी के प्रत्येक विकास को बैंकिंग और वित्त ने सहर्ष अंगीकार कर लिया है। लेनदेन की सर्वाधिक बढ़ती हुई मात्रा तथा ग्राहकों की अत्यधिक बदलती हुई उम्मीदों ने इसके प्रयोग में जबरदस्त अंतर ला दिया है। साथ ही किसी अन्य कार्य की भांति इसमें भी उसकी क्षमता तथा गुणवत्ता एवं लागत कम करने की आवश्यकता है।

4. रिज़र्व बैंक इस बात से भलीभांति परिचित है कि बैंकिंग प्रणाली में प्रौद्योगिकी का फायदेमंद तरीके से इस्तेमाल कैसे किया जाए।बैंकिंग क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के निर्बाध इस्तेमाल के प्रति प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए रिज़र्व बैंक ने उसे अंगीकार करने एवं उसके बढ़ते उपयोग के लिए स्वीकार्य बुनियाद का निर्माण किया, 1996 में आईडीआरबीटी की स्थापना के अतिरिक्त इसके लिए हम 1980 के दशक की रंगराजन समिति 1 और रंगराजन समिति 2, 1990 तथा 2000 के दशक में सराफ एवं बर्मन कार्यकारी समूह के भी आभारी हैं। रिज़र्व बैंक ने एक नई संस्था रिज़र्व बैंक सूचना प्रौद्योगिकी(रेबिट) प्रा.लिमि. के नाम से स्थापित की है, जो इसके पूर्ण स्वामित्व में है। इसकी स्थापना सायबर सुरक्षा के बारे में उच्चतम स्तर पर फोकस करने तथा बैंकिंग क्षेत्र में वित्तीय प्रौद्योगिकी का पर्यवेक्षण एवं अग्रणी क्षमता का निर्माण करने के लिए की गई है। रिज़र्व बैंक ने वित्तीय प्रौद्योगिकी के संबंध में एक कार्यकारी समूह का गठन किया है ताकि यह पूरी तरह से यह समझा जा सके कि फिन-टेक के क्षेत्र में क्या नया बदलाव हुआ है जिससे उसके सर्वोत्तम उपयोग का पता लगाया जा सके।

5. हाल के समय में प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्रों के लिए अनेक हस्त-त्राण हैसियत रखने वाली प्रौद्योगिकी का खुलासा किया है। मैं उनमें से पांच के बारे में प्रकाश डालना चाहूंगा।

6. पहली है सायबर सुरक्षा। बैंक नकदी और पैसे का लेनदेन करते हैं इसलिए हमेशा अपारध की ज़द में रहते हैं; जहां बैंक नकदी एवं पैसे की सुरक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर इस्तेमाल करते हैं, वहीं हद तो यह है कि अपराधियों द्वारा इसका इस्तेमाल काफी बढ़ा गया है। आज, बैंकों का आईटी सिस्टम सायबर अपराध का शिकार है तथा यदि कोई इसकी गंभीरता को उसके मात्रा एवं घटनाओं के मूल्य से मापे तो खतरा बढ़ता ही जा रहा है। यह बहुत ही चिंता की बात है - बांगलादेश बैंक में हुई हाल की घटना तथा कई बैंकों में हो रही अनेक घटनाएं आइसबर्ग की मिसाल बन गई हैं। यदि हम सुरक्षित एवं सुरक्षापूर्ण बैंकिंग प्रदान करना चाहते हैं तो सुरक्षित आईटी प्रणाली की आवश्यकता से कोई इनकार नहीं कर सकता है। यह ज़रूरी है कि प्रत्येक आईटी आधारित पहल में सुरक्षा को प्रमुख कंपोनेंट माना जाता है। बैंकों को सायबर सुरक्षा पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए। मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी(सीआईएसओ) की भूमिका इस संबंध में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह खुशी की बात है कि सभी बैंकों में सीआईएसओ का सेटअप बहुत अच्छा है। जैसाकि मैंने पहले उल्लेख किया है कि अपराधी कंप्यूटर के जानकार हैं; सायबर के आक्रमण अत्यधिक परिमार्जित होते हैं, वे विशिष्ट विश्लेषणात्मक तकनीक का उपयोग करते हैं जो मिनट में प्रभाव डालती है जिसे अभी तक नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है। इसके लिए सतत सतर्कता एवं लगातार अतिसक्रिय सुरक्षात्मक कार्रवाई की आवश्यकता है। आईडीआरबीटी के तत्वावधान में सीएसआईओ मंच बना हुआ है, यह मंच आईडीआरबीटी में सायबर सुरक्षा के बारे में सतत किए जा रहे अनुसंधान के साथ-साथ बैंकों में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए सहायता प्रदान करेगा, सायबर घटनाओं के अपराधियों को मात देने के लिए तत्परता से कार्रवाई करेगा और कार्य करने योग्य सुरक्षा संबंधी विस्तार करेगा।

---

* श्री आर. गांधी, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 18 जुलाई, 2016 को आईडीआरबीटी, हैदराबाद में आयोजित 12वें आईडीआरबीटी बैंकिंग प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में दिया गया प्रारंभिक वक्तव्य। श्री एस. गणेश कुमार, मुमप्र द्वारा दिए गए सहयोग के प्रति आभार।

7. दूसरी तेजी से विकसित होती हुई प्रौद्योगिकी है। आईटी संसार की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह लगातार बदलती रहती है और गतिमान रहती है। क्लाउड आधारित कंप्यूटिंग, ब्लाक चेन प्रोसेसिंग टकनालाजी तथा आईटी प्रणाली का वर्चुअलाइजेशन कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनमें बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किए जाने की क्षमता है। इन प्रौद्योगिकी का लाभ सुरक्षित, ट्रैक करने योग्य, और सुरक्षित डिजिटल करेंसी, विभाजित लेजर-कीपिंग तथा स्वदेशी आईटी प्रणाली के रूप में मिलना चाहिए - ये सब मिलकर अंततः बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करेंगी। बैंक और आईडीबीआरटी मिलकर कार्य कर सकते हैं, इनका अध्ययन कर सकते हैं, जांच कर सकते हैं तथा उनके सर्वोत्तम उपयोग के लिए उन्हें अपना सकते हैं।

8. तीसरा फिनटेक कंपनियां हैं - एक गैर-समरूप हानिकारक केरूप में। काफी लंबे समय तक बैंक यह सोचते रहे कि उनके प्रतिस्पर्धी उनके साथी बैंकर्स हैं, लेकिन बाद में उन्होंने यह स्वीकार किया कि अन्य वित्तीय संस्थाएं उनकी प्रतिस्पर्धी हैं। उन्होंने हमेशा यह माना कि प्रौद्योगिकी कंपनियां उन्हें सेवाएं सुकर बनाने केलिए हैं, उनकी सहायता से, बैंक स्वयं को भीड़ में सबसे अलग महसूस कर रहे थे। बैंकों ने यह कभी नहीं सोचा था कि प्रौद्योगिकी कंपनियां स्वयं उनकी प्रतिस्पर्धी होंगी। मैं वर्ष 2000 के प्रारंभ से इस संभावना के बारे में बता रहा था। मैंने इसी प्लेटफार्म पर यह बात कही है कि बैंकिंग का ज्ञान अब मात्र बैंकों का नहीं बल्कि यह टेकीज के पास भी चला गया है। यह टेकीज अब फिनटेक कंपनियों के रूप में उभरे हैं और बैंकिंग के अधिकांश कारोबार में इनकी शिनाख्त सीधे-सीधे प्रतिस्पर्धी के रूप में हुई है। आज प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग और वित्त की समस्त वैल्यू-चेन को विभाजित कर दिया है और पूरे खंड को नवोन्मेषी तरीके से बंडल बना दिया है और इस प्रकार ये टेकीज ही हैं जो बचतकर्ता तथा निवेशक के बीच या धन भेजने या पाने वाले के बीच मध्यस्थता का कार्य करते हैं। बैंकों को नवोन्मेष को रोके बिना उनके साथ सावधानीपूर्वक पेश आना होगा, बैंकों को उमके साथ सहयोग करने के लिए रास्ता ढूंढना होगा, उन्हें स्वयं के साथ मिलाना होगा तथा फिनटेक कंपनियों के साथ स्पर्धा करनी होगी।

9. सच तो यह है कि ये फिनटेक कंपनियां स्पर्धा के रूप में केंद्रीय बैंक के दरवाज़े को भी खटखटा रही हैं। हम सभी यह मानते रहे हैं कि करेंसी जारी करने में केंद्रीय बैंक का कोई प्रतिस्पर्धी नहीं है। लेकिन इस स्थिति को ई-करेंसी के माध्यम से चुनौती दी जा चुकी है। मैं अभी भी यह बात कहना चाहता हूं जो मैंने पहले 2001 में कही थी कि ई-करेंसी, किसी करेंसी का विकल्प नहीं है, यदि किसी भी तरह है भी तो वह किसी अन्य भुगतान लिखत का विकल्प मात्र हो सकती है। लेकिन, अनुसंधानकर्ता एवं नवोन्मेष करने वाले मैदान में भरे पड़े हैं और वे ई-करेंसी के विकास का अपना प्रयास जारी रखेंगे। इसकी सफलता के बारे में मेरे संदेह प्रकट करने के बावजूद मैं इस विषय पर अनुसंधान किए जाने का समर्थन करता हूं।

10. चौथा प्रौद्योगिकी द्वारा लाई गई भुगतान क्रांति है। बैंकिंग प्रणाली में आईटी का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल भुगतान प्रणाली ने किया है और उसका सबसे ज्यादा फायदा उठाया है। भारत अब विश्व में सबसे आधुनिकतन भुगतान और निपटान प्रणाली होने की डींग मार सकती है, और वह इसके माध्यम से सबसे अधिक बढ़ती हुई मात्रा का संचालन कर रही है। जहां यह बात संतोष की है कि भुगतान प्रणाली में कुछ नई पहल की गई हैं जो बेहतर ग्राहक सुविधा प्रदान करेंगी, वहीं पर यह भी सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि ये प्रणालियां सुरक्षित हों तथा उनकी समग्र क्षमता बनी रहे साथ ही आम आदमी को कम लागत पर उपलब्ध हों। भुगतान क्रांति का पूरा-पूरा फायदा किस प्रकार उठाया जाए यह एक चुनौती है।

11. पांचवी बात वित्तीय समावेशन केलिए विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकी का चयन करना है। वित्तीय समावेशन एक प्राप्त करने योग्य हक़ीक़त है, और इस पहल में आईटी की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं सिद्धांतपरक है। इस संबंध में और अधिक कार्य किए जाने की आवश्यकता है। हमें खाता खोलने एवं केवायसी संबंधी अपेक्षाओं को अन्य प्रणालियों जैसे आधार से जोड़ने की ज़रूरत है, नकदी की आवाजाही के बिना धन का उपयोग करने की अनुमति होना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना होगा कि बैंकिंग और वित्तीय सेवाएं आम आदमी के दरवाज़े तह उपलब्ध हों। विभिन्न प्रकार के तकनीकी समाधान से ऐसा किया जाना संभव है और वह भी कम लागत पर। इनका सही तरह से मिश्रण करना तथा उन्हें अपनाते हुए वित्तीय समावेशन यथासंभव कम से कम समय में प्राप्त करना बहुत बड़ी चुनौती है।

12. यदि बैंकिंग उद्योग इन चुनौतियों का अच्छी तरह से सामना करना चाहता है तो अकादमी, उद्योग तथा बैंकिंग पेशेवरों को मिलकर काम करना होगा। आईडीआरबीटी इस प्रकार की संयुक्त कार्रवाई करने के लिए उत्तम सेटिंग उपलब्ध कराता है। आईडीआरबीटी के समन्वयन में सीआईओ मंच तथा सीआईएसओ मंच इसके लिए उपयुक्त चैनल हैं। मुझे उम्मीद है कि इन मंचों के समन्वय से सफलता प्राप्त होगी।

13. अंत में, जहां तक इस पुरस्कार समारोह का संबंध है, किए गए अच्छे कार्य को मान्यता प्रदान करना हमेशा सफल प्रेरक तत्व रहा है। आईडीआरबीटी लागातार इस पुरस्कार समारोह का आयोजन करता रहा है। मैं विजेताओं को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि वे इस स्थिति से आगे निकलेंगे; मुझे उम्मीद है कि आगामी वर्ष में इस पुरस्कार में और अधिक बैंक पुरस्कार पाने का गौरव प्राप्त करेंगे।

14. ध्यानपूर्वक सुनने के लिए आपका धन्यवाद।